International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-11-2018; Accepted: 04-12-2018
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 1; January 2019; Page No. 06-07

मादक द्रव्य व्यसन एवं युवा वर्ग

डॉ0 पूजा तिवारी
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शासकीय महा0 बिछुआ, छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
वर्तमान समय में समाज की सर्वाधिक ज्वलंत समस्या के रूप में ''युवा वर्ग में ड्रग्स की बढती समस्या'' को रखा जाना अतिश्योक्ति नही होगी, क्योंकि सर्वविदित है कि किसी भी समाज की संरचना में ''युवा वर्ग'' ही वह केन्द्र बिन्दु होता है जिसके आसपास ही समाज की प्रगति एवं विकास का लक्ष्य होता है किन्तु यदि युवा वर्ग ही मादक द्रव्य व्यसन के कुचक्र में फंस जाये तो समाज की स्थिति शोचनीय होगी। युवा वर्ग में मादक द्रव्य का सेवन एक ''फैसन'' सा बन गया है, परिणाम यह है कि मादक द्रव्य को उत्तेजक अनुभव के लिए प्रयोग करने के बाद शनैः शनैः ये नवयुवक इन नशीली दवाओं के अभ्यस्त हो जाते है और ये लतखोर बन जाते है।

मूल शब्द : युवा वर्ग, मादक पदार्थ, ड्रग्स और क्राइम।

प्रस्तावना : शोध प्रविधि
शोध पत्र विषय ''मादक द्रव्य व्यसन एवं युवा वर्ग'' नामक शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध सामाग्री के आधार पर शोध पत्र तैयार किया गया है। शोध पत्र के उचित स्थान पर सन्दर्भित करने का भी प्रयास किया गया है। पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से अध्ययन को विशेष महत्व प्रदान किया गया है।

समस्या
संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ और अपराध कार्यालय एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की ओर से करवाए गए सर्वे के अनुसार देश के 12 से 18 वर्ष की उम्र लगभग 35 फीसदी बच्चे नशे के शिकार बनते है।
न्युयार्क में किये गये सर्वे के अनुसार ''मादक द्रव्यों की बिक्री बढ़ने के साथ–साथ अपराधों की संख्या भी बढ़ती है।'' अर्थात् ड्रग्स और क्राइम का संबंध चोली दामन जैसा है।

उद्देश्य
मादक द्रव्य व्यसन एक ऐसी स्थिति को दर्शाता है जिसमें शरीर को कार्य करते रहने हेतु नशीले पदार्थो का सेवन की आवश्यकता पड़ती है जबकि ''आदतन'' का आशय है कि व्यक्ति मानसिक रूप से ड्रग्स पर निर्भर हो जाता है। व्यसन एवं आदतन में केवल ''अनिवार्यता'' का अंतर होता है अर्थात् आदतन में व्यसन की तरह अनिवार्यता नही होती है।
यदि हम इतिहास पर नजर डालें तो ज्ञात होता है कि द्वितीय महायुद्ध के बाद पश्चिम देशों में ड्रग्स का विस्तार हुआ। भारत में उस समय केवल अशिक्षित, गरीब लोग अपने गम भुलाने, तनावों को भुलाने हेतु नशा करते थे, किन्तु वर्तमान में लगभग सभी वर्ग अमीर, शहरी, साक्षर सभी युवाओं में यह फैशन बन गया है। मादक द्रव्य व्यसन की कुछ प्रमुख विशेषताएं होती है यथा नशीली दवा में सेवन की तीव्र इच्छा नशे की मात्रा का बढ़ना, नशा मजबूरी बन जाना, एवं व्यक्ति का नशे का गुलाम बन जाना।

समाधान
युवा वर्ग क्यों फंसता है ड्रग्स के कुचक्र में – अक्सर देखा गया है कि युवा वर्ग में ड्रग्स की शुरूआत ''सिगरेट'' पीने से प्रारंभ होती है, ड्रग्स के कुचक्र में फंसने के कई कारण हो जाते है। यथा, मित्रमंडली, संगत, डिप्रेशन, अज्ञानता, फैशन, विज्ञापन का प्रभाव, प्रेम में असफलता, जिज्ञासा, सर्वाधिक मुख्य कारण ''ड्रग्स की उपलब्धता'' युवा वर्ग को कही न कही से ड्रग्स प्राप्त हो ही जाते है।
मादक पदार्थ के कई प्रकार है जिनसे कई प्रकार की हानियाँ होती है जैसे कोकीन, हेरोयन, मेरीजुआन, एवस्टेसी, स्पीड अफीम मेडक्स, चरस, गांजा, भांग, मारफीन, हशीश, ब्राउन शुगर आदि। लगभग सभी पदार्थों से शिराओं का अवरोधक होना, उल्टी हृदय रोग आलस्य, श्वसन तंत्र को हानि, एवं मस्तिष्क हेतु खतरनाक होना एवं अन्य दुष्परिणाम ही पाए जाते है।
डॉ0 राम आहुजा के अनुसार लगभग 90 प्रतिशत छात्रों में यह नियमित आदत, 1 प्रतिशत व्यसनी 2 तिहाई मनोरंजन हेतु इसका उपयोग करते है।
टाइम्स आफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार :– ''लगभग 40 टन हेरोयन साउथ एशिया में पैदा होती है जिसमें लगभग 17 टन भारत में उपयोग किया जाता है। लगभग 1.4 डालर बिलियन का व्यापार होता है। लगभग 51 मिलियन लोग हेरोयन के एडिम्ट है। यूना इटेड नेशन के अनुसार साउथ एशिया में, 'भारत' में हेरोयन के कस्टमर सर्वाधिक है।
नशीली दवाओं के लगभग 70 प्रतिशत स्मगलर्स मात्र 25 से 30 वर्ष के बीच की आयु समूह के होते है। ड्रग्स तस्करी में नाइजीरिया के 70 प्रतिशत, पाकिस्तान के 50 प्रतिशत, तंजानिया एवं भारत तथा अन्य देशों में 5–10 प्रतिशत लोग लिप्त पाये जाते है।
ड्रग्स के पुष्परिणामों हेतु कई अध्ययनकर्ताओं ने अध्ययन किया यथा बनर्जी (कलकत्ता) 1963, दयाल (दिल्ली)1977, चिटनिस (मुम्बई) 1974 एवं डॉ राम आहुजा एवं डॉ0 दुबे गुप्ता यादि।
आज युवा वर्ग दिगभ्रमित है, एक ओर देश की प्रगति दूसरी ओर बढ़ती बेरोजगारी मंहगाई है। दूरसंचार के साधन, आवागमन के पूर्ण विकसित साधन, मोबाइल, कम्प्यूटर, लैपटाप, अतिआधुनिक बाईक, कारें सभी कुछ युवओं के आसपास है, किन्तु आधुनिकता, पश्चिमीकरण, फैशन टूटते परिवार, बढ़ते तलाक समझौता न करने की प्रतृत्ति, झूठी शान, लिव इन रिलेशनशिप, आदि के कारण भारत में यह समस्या दिनोदिन बढ़ती जा रही है, क्या आम और क्या खास, सभी इसके कुचक्र में फंसते रहे है। फिल्म जगत से सुप्रसिद्ध फिल्म स्टार ''संजय दत्त'' और ''फरदीन खान'' जैसी हस्तियाँ ड्रग्स के कुचक्र में फंसकर किसी तरह से उबर पाये है। इस समस्या का प्रभाव गांव नगर, महानगरों के युवाओं पर एक जैसी सोच रखने के कारण समान रूप से पड़ता है, मादक द्रव्य व्यसन के केवल दुष्परिणाम ही सामने आते है। यथा मानसिक रोग, हताशा, शारीरिक दुर्बलता, अपराध की प्रतृत्ति, गरीबी पारिवारिक विघटन, सामुदायिक

एवं विघटन आदि भारत में ड्रग्स सप्लाई का मुख्य केन्द्र राजस्थान है, जहाँ से अन्तर्राष्ट्रीय सीमा लगती है, दिल्ली में ''हेरोयन'' की सप्लाई श्री गंगा नगर, जयपुर से होते हुए पहुँचती है। पाकिस्तान से उँटों पर लागकर ड्रग्स सप्लाई की जाती है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग 8 लाख लोग हेरोयन का उपभोग करते है एवं प्रतिमाह 90 से 100 करोड के बीच मादक पदार्थो की बिक्री होती है।

वर्तमान समय में युवा वर्ग में युवकों के साथ–साथ युवतियाँ भी बहकते कदमों से लडखडाती, मदहोश जिन्दगी, बेपरवाह एवं संस्कृति से कोसो दूर होती जा रही है, आज युवा वर्ग अपने इस गलत काम को ''स्टाइलिश लाइफ'' कहने से भी पीछे नही हटता है, होश तब आता है जब चिड़िया खेत चुग लेती है, शरीर साथ नही देता, उपचार की नौबत आ जाती है और व्यक्ति मौत की कगार पर खड़ा हो जाता है। इस बुरी लत से केवल सेवनकर्ता ही हानि नही उठाता बल्कि उससे जुड़े हर शख्त को कष्ट झेलना पड़ता है, युवा के परिवार को समाज में शर्मिदंगी झेलना पडता है, अपने पुत्र या पुत्री को, नशे के चंगुल में फंस कर तिल तिल कर मरते हुए देखना परिवार वालों की मजबूती बन जाती है।

नशे से बचाव

1. **परिवार :–** मॉ–पिता छोटे बच्चों को सुखमय, शांत वातावरण प्रदान करें, बडे लोग स्वयं मद्यपान न करे, आपस में कलह न करें।
2. **शिक्षण संस्था :–** बुद्धिजीवी वर्ग, पुलिस, एन.जी.ओ आदि इस ओर सक्रिय पहल कर सकते है।

सन 1995 से आयोग की नियुक्ति एवं 1936 में केन्द्रीय संगठन की स्थापना, 1959 में ''नाटकोटिक्स ड्रग्स एंड साहकोट्राफिक सबस्टेन्सेज एक्ट बनाया गया इसके तहत अवैध व्यापार में पकड़े जाने पर 10 वर्ष की सजा, 01 लाख जुर्माना रखा गया।

इसके अलावा भारत में 26 पुनर्वास केन्द्र 91 परामर्श केन्द्र, 76 संस्थाएं एवं कई एन. जी. ओ आदि कार्यरत है। दिल्ली पुलिस द्वारा नवज्योति, नामक संस्था में अब तक 9000 लोगों को सुधारा गया है प्रथम महिला आईपी एस डॉ. किरण वेदी ने इंडिया विजन फाउंडेशन नामक संस्था की रचना की है जो नशा मुक्ति हेतु अथक प्रयासरत है। इसके अलावा समस्या का उपचार हम जनचेतना, नुक्कड़ नाटक, संगोष्ठी, सभाएं, विज्ञापन आदि से कर सकते है। सबसे आवश्यक उपचार है ''युवा वर्ग को समझना'', अक्सर देखा गया है कि पुरानी पीढ़ी सार्वजनिक तौर पर नयी पीढ़ी युवा वर्ग की आलोचना करती नजर आती है। कई बार परिवार के मुखिया का कडक व्यवहार भी पुत्र को इस ओर ढकेलता है, हमें समझना होगा कि युवा वर्ग क्या चाहता है, उनसे हम मित्रवता व्यवहार करें, संवाद करें, उनकी बातों को समझे, कहने का तात्पर्य है कि युवा वर्ग के आस पास स्वस्थ समाजिक पर्यावरण रखु, इसके साथ ही युवा वर्ग को चाहिए कि वो एक पल के लिए अपने परिवार, समाज, देश एवं स्वयं अपने विषय में सोचे।

निष्कर्ष

अंत में यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज एवं संस्कृति एवं प्रत्येक धर्म में नशा करने को हराम कहा गया है, यदि युवा वर्ग किसी भी तरह से इस बुरी आदत से बच कर रहे तो वह अपनी ताकत देश की प्रगति एवं विकास की राह पर लगा सकता है क्योंकि युवा वर्ग ही वह वर्ग है जो देश को आगे की ओर ले जा सकता है। सरकार को चाहिए कि वह अधिक राजस्व की कमाई का लोभ त्याग कर नशबंदी हेतु कडे से कडा कानून बनाये। अब समय आ गया है कि हम सब मिलकर युवा वर्ग में मादक द्रव्य व्यसन के बढ़ते चलन को रोके एवं एक स्वस्थ समाज की रचना में अपना अमूल्य योगदान दे।

अंत में समस्त युवा वर्ग के लिए चार पंक्तियों द्वारा संदेश देकर अपने शोध पत्र को पूर्णता प्रदान करना चाहती हूँ।

नशा करना है एक नादानी, खो न देना अमूल्य जवानी
पहचान कर इस अनमोन जीवन को
ड्रग्स के कुचक्र से निकल कर लिखो एक नयी कहानी

संदर्भ ग्रन्थ

1. आधुनिक समाज शास्त्रीय निबंध – एम. एन. सिंह
2. भारतीय समाज – डॉ0 नूर मोहम्मद
3. अपराध शास्त्र – डॉ. एम. एस. चौहान
4. यूनीफाइड समाजशास्त्र – डॉ. गुप्ता/शर्मा
5. हिम्मत है। (किरण बेदी) परमेश डंगवाल
6. अहा! जिन्दगी– दैनिक भास्कर